जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

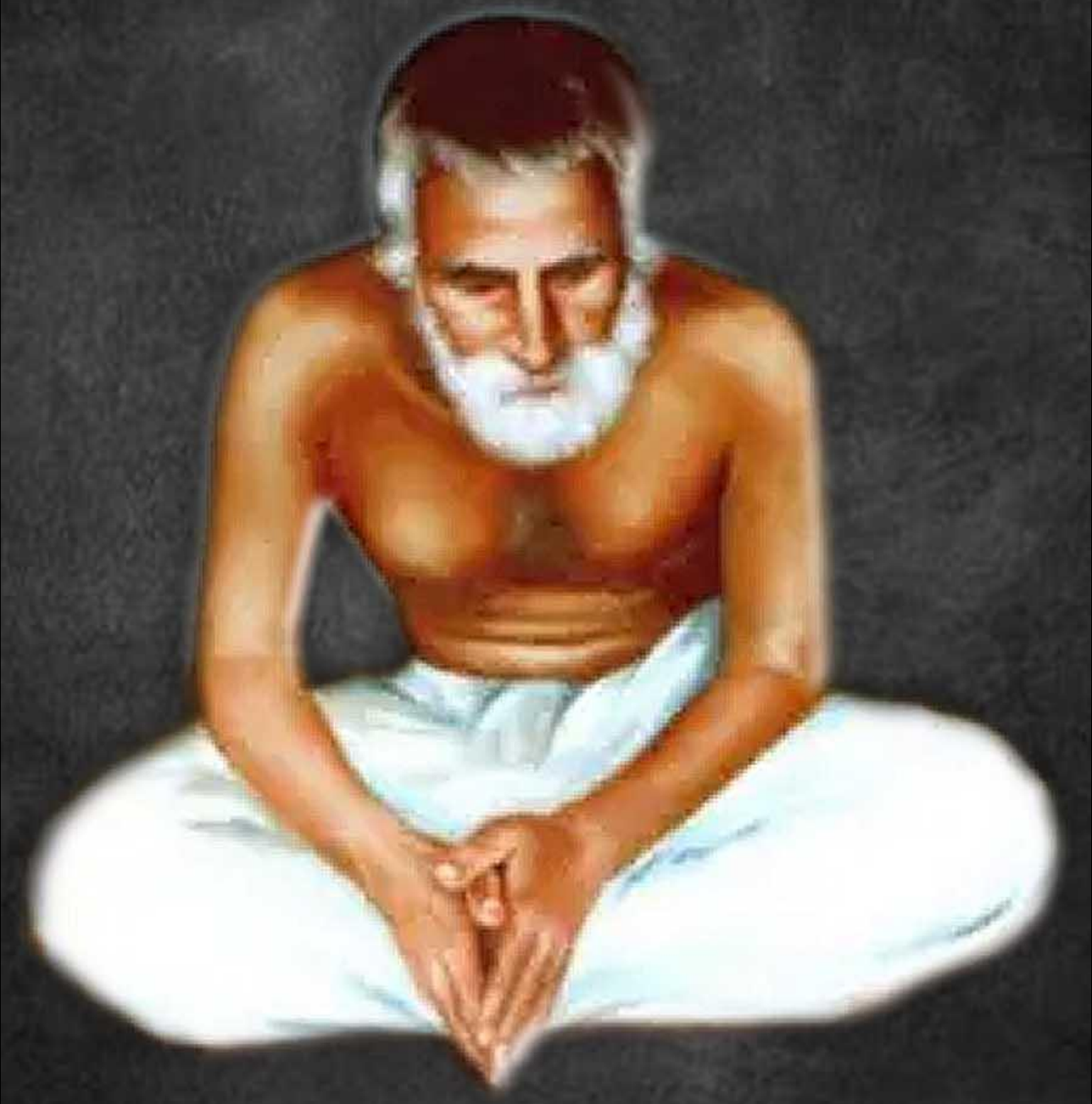

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

बनावटी वैराग्य का दम्भ

श्रीलगुरुदेव

श्रीधाम मायापुर में श्रीमन् महाप्रभु जी के जन्मस्थान पर ॐ विष्णुपाद श्रील भक्तिविनोद ठाकुर के शिष्याभिमानी गोपाल दास बाबाजी नाम के एक व्यक्ति ने श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के वैराग्य का बनावटी अनुकरण (नकल) करना शुरु कर दिया। गोपालदास हर समय भजन में निविष्ट हैं— यह दिखाने के लिए

श्रीधाम में जिस स्थान पर वे रहते थे, वहाँ जितने भी फलों के बगीचे थे, गाय, बकरियों द्वारा आकर उन्हें नष्ट कर देने पर भी गोपालदास इस सबके प्रति उदासीन रहते अर्थात् वे ऐसा अभिनय करते कि उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। हमेशा नाम में ही मग्न हैं; इसलिए इन सभी बाहरी कार्यों में उनका कोई अनुराग नहीं है — इस प्रकार का अभिनय करते।

श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज की अपेक्षा उनका अधिक वैराग्य है— यह उन्होंने एक दिन श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती

प्रभुपाद को बताते हुए दम्भ (अहंकार) प्रदर्शन किया। श्रील सरस्वती ठाकुर ने उनके नित्य मंगल - विधान के लिए उन पर शासन करते हुए अपने प्रभु, श्रीमद् गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के अतिमर्त्य चरित्र और अलौकिक कृष्ण प्रीति वांछा के मूल में वैराग्य का माहात्म्य - कीर्त्तन किया। गोपालदास ने श्रील भक्तिविनोद ठाकुर के पास जाकर श्रील प्रभुपाद जी के विरुद्ध शिकायत की। श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने उसके उतर में गोपालदास को बताया— "सरस्वती के शासन और उपदेश सुनने से ही तुम्हारा मंगल होगा।" श्रीमायापुर के

प्राचीन मुसलमान तक श्रील गोरकिशोर दास बाबाजी महाराज और गोपालदास के वैराग्य के अभिनय के विषय में कि एक असली है और एक नकली, यह आपस में बातचीत करते थे। महाभागवत के वैराग्य का अनुकरण करने पर ही वैरागी और भजनानन्दी नहीं हुआ जाता। "

श्रीलगुरुदेव